Date: 21 जून 2023

भारत और वियतनाम

सिलेबस: जीएस 2 / अंतरराष्ट्रीय सबंध

सदर्भ-

- भारत ने वियतनाम की नौसैनिक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए स्वदेश निर्मित इन-सर्विस मिसाइल कोरवेट आईएनएस कृपाण उपहार में दिया हैं।

कोरवेट क्या है?

- एक कार्वेट सबसे छोटा प्रकार का नौसेना जहाज है , साइज के हिसाब से सबसे छोटे कोरवेट होते हैं , फिर फ्रीगेट और सबसे बड़े डिस्ट्रॉयर।
- यह मिसाइल नौकाओं , पनडुब्बी रोधी जहाजों , तटीय गश्ती शिल्प और तेजी से हमला करने वाले नौसैनिक जहाजों के साथ सबसे चुस्त जहाजों में से एक है।

आईएनएस कृपाण के बारे में-

- आईएनएस कृपाण **खुखरी वर्ग** से संबंधित एक **मिसाइल जलपोत** है, जिसका **विस्थापन लगभग 1,350 टन** है।
- इसे नेवी में 12 जनवरी 1991 को शामिल किया गया था। 91 मीटर की इस वॉरशिप में मीडियम रेंज की गन लगी है।
- इसमें लगभग 1,400 टन का विस्थापन , 91 मीटर की लंबाई, 11 मीटर की बीम है और यह 25 समुद्री मील से अधिक गति में गति करने में सक्षम है।
- जहाज मध्यम दूरी की तोप , **30 एमएम की क्लोज-रेंज गन , चैफ लॉन्चर और सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलों** हैं।
- इसके अलावा मिसाइल और लॉन्चर भी तैनात रहते हैं। यह समंदर में कई भूमिकाओं को निभाने में सक्षम है।

भारत-वियतनाम रक्षा संबंध-

भारत-वियतनाम रक्षा संबंध भारतीय और वियतनामी सुरक्षा तथा सहयोग को संबलित करने के लिए मजबूत आधार पर आधारित हैं। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में वियतनाम एक महत्वपूर्ण साझेदार है। जुलाई 2007 में वियतनाम के तत्कालीन प्रधानमंत्री गुयेन तान दुंग की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच संबंधों का स्तर 'रणनीतिक साझेदारी' के स्तर पर पहुंच गया था।

- 2000 के दशक की शुरुआत में, भारतीय वायुसेना ने वियतनाम को हेलीकॉप्टर्स और वायुसेना उपकरणों की आपूर्ति की है।
- **रक्षा सहयोग पर संयुक्त दृष्टि:** 2009 में रक्षा मंत्रालयों के बीच हस्ताक्षरित रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन और 2015 में रक्षा मंत्रियों द्वारा हस्ताक्षरित रक्षा सहयोग पर संयुक्त दृष्टिकोण ने संस्थागत ढांचा प्रदान किया।
- **2022 में भारत के रक्षा मंत्री की यात्रा: "2030 तक भारत-वियतनाम रक्षा साझेदारी पर संयुक्त दृष्टि वक्तव्य"** और "पारस्परिक रसद समर्थन पर समझौता ज्ञापन" पर हस्ताक्षर किए गए।
    - दोनों देशों के बीच संयुक्त अभ्यास और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इसके साथ ही, तकनीकी सहयोग, संयुक्त अभ्यास, सैन्य विचार-विमर्श और वापसी के अनुबंध जैसे क्षेत्रों में भी सहयोग हो रहा है। इस रक्षा संबंध से दोनों देशों की सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता मजबूती प्राप्त कर रही है।
- **चीन का मुकाबला: उभरते चीन को** संतुलित करने के लिए अमेरिका , ऑस्ट्रेलिया, भारत जैसी बाहरी शक्तियों के दक्षिण पूर्व एशिया में बढ़ते प्रभाव की बात आने पर अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की युद्धशीलता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, यह वियतनाम है जो खुले तौर पर अमेरिका, भारत जैसे देशों के विचार का समर्थन करता है जो इस क्षेत्र का सामना कर रहे चुनौतियों में अधिक रुचि लेते हैं।
- **भारत और वियतनाम हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए** साझा सुरक्षा, विकास और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल और हिंद-प्रशांत पर आसियान के दृष्टिकोण के अनुरूप द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने पर सहमत हुए हैं।
- **रक्षा निर्यातक का भारत का दृष्टिकोण: रक्षा संबंधों** और रक्षा उद्योग सहयोग को और बढ़ावा देने के लिए एक और वैश्विक स्तर पर रक्षा क्षेत्र में संभावित निर्यातक के रूप में अपनी जगह स्थापित करने के भारत के अभियान के लिए किया गया है।

आगे का रास्ता-

- व्यापार और वाणिज्य के विकास के लिए रणनीतिक और आर्थिक दोनों देश चीन पर निर्भरता को खत्म करने की इच्छा रखते हैं।
- हाल के वर्षों में उभर रही आपूर्ति श्रृंखला से संबंधित समस्या ने उन्हें वैकल्पिक आपूर्ति लाइन पर विचार करने के लिए भी प्रेरित किया है। इसके अलावा , दोनों राष्ट्र एक स्थिर , खुले, मुक्त और समावेशी हिंद-प्रशांत महासागर क्षेत्र चाहते हैं। इस प्रकार, दोनों के समान उद्देश्य हैं।
- भारत एक्ट ईस्ट नीति का अनुसरण कर रहा है और हिंद-प्रशांत को मुक्त और खुला बनाने के लिए काम कर रहा है, जो क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर) को बढ़ावा देगा।
- ये आने वाली अवधि में भारत और वियतनाम के बीच व्यापार और वाणिज्य के और विकास की संभावनाओं को उज्ज्वल बनाते हैं।

स्रोत:द हिन्दू

Rajiv Pandey

शैल चित्र

सिलेबस: जीएस 1 / कला और संस्कृति

संदर्भ-

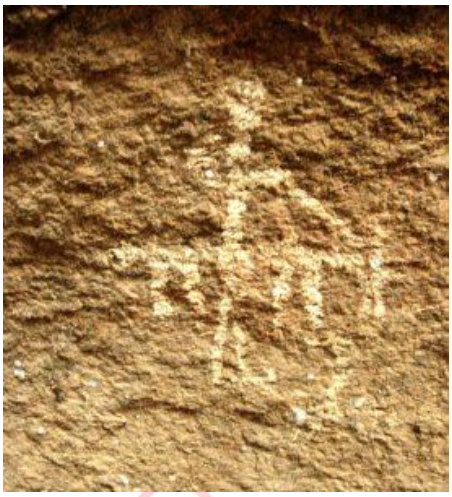

- आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के ओरवाकल्लू गांव में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने मध्य पाषाण युग के दौरान भूमि की जुताई करने वाले एक व्यक्ति की पेंटिंग मिली।
- प्राकृतिक सफेद **काओलिनाइट**और लाल गेरू रंग " के साथ बनाई गई थीं, साथ ही उनमें से अधिकांश "हवा " के संपर्क में आने के कारण "बुरी तरह क्षतिग्रस्त" हो गए हैं।

गेरू और काओलिनाइट के बारे में-

- गेरू मिट्टी, रेत और फेरिक ऑक्साइड से बना वर्णक है।
- काओलिनाइट एक नरम, मटमैला और आमतौर पर सफेद खनिज है जो फेल्डस्पार जैसे एल्यूमीनियम सिलिकेट खनिजों के रासायनिक अपक्षय द्वारा निर्मित होता है।

शैल चित्र के बारे में-

- शैल चित्र प्राचीन कला शैली है , यह मानव द्वारा निर्मित चिह्नों/चित्रों/मूर्तियों की प्राकृतिक पत्थर पर अंकित एक प्रकार की छाप है।
- शैल चित्रों में शिलाखंड (Boulders) और चबूतरों (Platform) पर चित्रों, रेखाचित्रों के उत्कीर्णन, स्टेंसिल (Stencils), छपाई, आवास-स्थलों पर नक्काशी, शैलाश्रयों और गुफाओं के आँकड़े आदि शामिल हैं।
- सबसे अधिक और सुंदर शैल चित्र मध्य प्रदेश में विंध्याचल की श्रृंखलाओं और उत्तर प्रदेश में कैमूर की पहाड़ियों में मिले हैं।
- प्रागैतिहासिक शैल चित्र , गुफाओं की रॉक-कट वास्तुकला (Rock-Cut Architecture) और चट्टान से बने मंदिर और मूर्तियाँ भारत में शैल चित्र के कुछ उदाहरण हैं।
- इसे शैल चित्रों (पेट्रोग्राफ) और / या उत्कीर्णन, कपूलों आदि के रूप में देखा जा सकता है।
- वे मानव मन की उत्पत्ति को समझने का एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं और अपनी पारिस्थितिक में समाज की भौतिक संस्कृति का अध्ययन करने के लिए स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

भारत प्रागैतिहासिक शैल चित्र-

- रॉक आर्ट लद्दाख , (जम्मू और कश्मीर) , मणिपुर और हिमाचल प्रदेश से लेकर तमिलनाडु और केरल तक भारत के उत्तरी, पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी भाग में व्यापक रूप से वितरित किया जाता है।
- यह मुख्य रूप से इसके अद्वितीय भू-पर्यावरण सेट-अप के कारण है जो मध्य भारतीय पठार पर प्रारंभिक मानव संस्कृति के विकास का समर्थन करता है।
- भारत में शैल चित्रों की सर्वप्रथम खोज वर्ष 1867–68 में एक पुरातत्त्वविद् आर्किबोल्ड कार्लाइल (Archibold Carlleyle) द्वारा की गई थी।
- शैल चित्रों के अवशेष वर्तमान में मध्य प्रदेश , उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, उत्तराखंड और बिहार के कई ज़िलों में स्थित गुफाओं की दीवारों पर पाए गए हैं।
- विध्य रेंज में भीमबेटका रॉक आर्ट शेल्टर और सतपुड़ा में आदमगढ़ और पचमढ़ी भारत के सबसे महत्वपूर्ण रॉक आर्ट साइटों में से हैं।

मेसोलिथिक-

- जिसे मध्य पाषाण युग भी कहा जाता है , पैलियोलिथिक (पुराने पाषाण युग) और नियोलिथिक (नया पाषाण युग) के बीच मौजूद था।
- यह लगभग 12,000 साल पहले शुरू होकर लगभग 10,000 साल पहले की अवधि है।
- इस अवधि के दौरान पाए जाने वाले पत्थर के उपकरण आम तौर पर छोटे होते हैं और इन्हें **माइक्रोलिथ** कहा जाता है।

स्रोत: द हिन्दू

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com